धर्म जीवन

अप्रैल 2006

❊ आत्म बोधी होने की कुछ पूंजी

❊ सबसे बढ़कर हृदय की बेहतरी है

❊ कल्याण में विशेष सत्संग

❊ माता–पिता विषयक विशेष सभा

❊ आत्मिक मौत से बचाया है

❊ मुझे मेरी माँ मिल गई

❊ अपना नाशुकरापन नज़र आया

भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में वर्जित कर्म

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह अपने स्वामी अथवा उसके सम्बन्धियों वा उसके मित्रों के प्रति अपमान सूचक कोई क्रिया न करे।

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह अपने स्वामी के प्रत्येक कार्य को उचित समय में और उत्तम रूप से पूरा करने में यथासाध्य कभी त्रुटि न करे।

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह अपने स्वामी की किसी वस्तु को अपनी असावधानता से कभी हानि न पहुंचावे।

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह अपने स्वामी की किसी वस्तु की चोरी न करे।

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह अपने स्वामी के जिस-जिस अधिकार की रक्षा करने के लिए नियुक्त हुआ हो, उसके सम्बन्ध में स्वामी के लाभ से अपने लाभ को बढ़कर न समझे।

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह अपने स्वामी के सम्बन्ध में प्रत्येक उचित कार्य के करने में स्वामी की रुचि पर अपनी रुचि को श्रेष्ठता न दे।

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह अपने स्वामी वा उसके किसी समीपी सम्बन्धी के सम्बन्ध में कोई अपराध करके उसके छिपाने के लिए कोई चेष्टा न करे।

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह अपने स्वामी वा उसके किसी समीपी सम्बन्धी की किसी उचित और गोपनीय बात को किसी और पर प्रगट करके विश्वासघाती न बने।

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह अपनी किसी वासना की अनुचित तृप्ति के वशीभूत होकर अपने स्वामी वा उसके किसी समीपी सम्बन्धी के शरीर, प्राण, धन सम्पत्ति और मान आदि को कोई हानि न पहुंचावे।

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह प्रतिशोध भाव के वशीभूत होकर, अपने स्वामी वा उसके किसी समीपी सम्बन्धी के शरीर, प्राण, धन और मान आदि को कोई अनुचित हानि न पहुंचावे।

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह अपने स्वामी को किसी अपराध वा पाप-मूलक कार्य के लिए जान बूझकर कभी प्रेरित न करे।

भृत्य स्वामी यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक भृत्य के लिए आवश्यक है, कि वह अपने स्वामी के किसी अपराध वा पाप-मूलक कार्य में जान बूझ कर कभी सहाय न करे।

धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 4
अप्रैल 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

आत्म-बोधी होने की कुछ पूंजी

देव धर्म की सारी शिक्षा आत्मा के भले पर आधारित है। आत्मा की रक्षा और विकास मनुष्य जीवन का मुख्य लक्ष्य है। इसलिए आत्म बोध का मनुष्य जीवन में विशेष महत्व है।

आत्मा की हानि, आत्मा के पतन का बोध ही आत्म बोध होता है। इस बोध के बिना मनुष्य जीवन सफल नहीं हो सकता। उसका मुख्य लक्ष्य सिद्ध नहीं हो सकता। हृदय के एहसासों का आत्मा की होश वा सोझी से गहरा सम्बन्ध है। यदि हम अपने एहसासों के विषय में जान लेते हैं, तो कुछ और नियम पूरे करके आत्म बोध प्राप्ति की सम्भावना हो सकती है।

देव धर्म की विशेष सत्संग के वातावरण से प्रभावित होकर मनुष्य को अपने पूजा, पाठ, आराधना सम्बन्धी मोटे मिथ्या विश्वासों से और मोटे मोटे पापों से छुटकारा मिल जाता है और वह अद्वितीय आर्विभाव देवात्मा का सेवक बनने का अधिकार प्राप्त कर लेता है।

थोड़े सेवकों को सत्संग के महत्व का एहसास होता है, जो उसके साथ सदा जुड़े रहना बहुत आवश्यक समझते हैं। जिन जनों को सभाओं और सत्संग में जाना आवश्यक महसूस होता है, कीमती लगता है, सौभाग्य लगता है, उनकी आत्मिक उन्नति की सम्भावना हो सकती है। जो सभा साधनों को कभी छोड़ना नहीं चाहते, सदा उनमें हाज़िर रहकर लाभ उठाना चाहते रहते हैं, बल्कि अपने पारिवारिक जनों को भी इससे लाभ उठवाना चाहते हैं, उनका और भला होने की आशा हो सकती है।

धर्म समाज के वातावरण का वा बाहर के वातावरण का ज़मीन आसमान का अन्तर है। बाहर का वातावरण कोयले की गैस की तरह मनुष्य को आत्मिक पक्ष में सुला देता है। आम सेवकों को अधिकतर बाहर के वातावरण में ही गुजरना पड़ता है, काम धन्धे, आने जाने वाले, तरह-तरह के सम्बन्धियों को मिलने, और पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति में वह सभा साधन बिसार बैठते हैं, सभा साधनों से एक-एक सेवक से लाभ नहीं उठाया जाता, दूसरों ने तो क्या लाभ उठाना था। ऐसे ही हालातों में घिरे रहकर हमारे हृदय के एहसास बताएंगे कि हम कितने आत्म उन्नति के इच्छुक बन सकते हैं।

यदि हमें घर के कामों को करके, ब्याह शादियों में शामिल होकर, सभा साधन वा उत्सव बिसार

कर ही तृप्ति मिलती है, खुशी मिलती है, तो और उन्नति की सम्भावना कम ही होती है। यदि हमें सभा साधन वा उत्सव याद रहें, वहां पहुंचने का घाटा महसूस होता रहे, और न पहुंचने में अपना आप अभागा होने का एहसास हो, दुःख महसूस हो, पछतावा महसूस हो, अपने आप पर कुछ शर्म आती हो, तो भले की अधिक सम्भावना हो सकती है।

परिवर्तन का नियम अटल है, यह हमारे भावों पर पूरा हावी है। भावों को लेकर हमारी गतियां होती हैं। भावों के बढ़ने घटने से, हमारी गतियां बढ़ती वा घटती रहती हैं। इस परिवर्तन का एहसास बड़ा ही कीमती है। यह एहसास हमारे उच्च अधिकारी होने के लक्षण हैं।

कई सेवकों को भजन अच्छे लगते हैं। वह भजन सुनकर वा स्वंय गुनगुना कर खुश रहते हैं। परन्तु समय के साथ, सांसारिक संगत में रहते वह भी भूल जाते हैं। कुछ समय बाद उन्हें यह एहसास होता है कि एक अच्छा अभ्यास उन्होंने छोड़ दिया है, इस पर उनकी क्या प्रतिक्रिया होती है?

यदि हम पहले उच्च ग्रन्थों का पाठ करके खुशी अनुभव करते थे, उससे लाभ उठाते थे, सांसारिक कामों में वह भूल गए हैं, उसके न होने से हम कितना दुःख महसूस करते हैं? पहले दूसरों को गुरु महाराज की महिमा सुनाते थे, उनसे मोटे पाप छुड़वाते थे, वह अब नहीं करते।

हम अपने बड़ों, अपने माता - पिता के चरणों में सिर रखकर प्रणाम करते थे, वह प्रणाम घट गया है, या अधूरा रह गया है, या केवल रस्म के रूप में रह गया है।

हम समाज की, किसी मन्दिर की, या संस्था की कोई सेवा करके खुश होते थे। किसी कर्मचारी वा उपकारी की सेवा करते थे, वह अब छोड़ दी है, क्या वह समय पाकर कुछ याद आती है, यदि याद आती है, तो हृदय में क्या प्रतिक्रिया होती है?

कोई दान करते थे, अब नहीं करते और न कोई आवश्यकता अनुभव करते हैं, पहले हम अपने नीच जीवन पर विचार करते थे, उसको लिखते थे, अब वह साधन नहीं करते, पहले गुण चिन्तन वा उपकार स्मरण करते थे, उसमें रस आता था, अब वह साधन छूट गया है: पहले निन्दा नहीं करते थे, निन्दा करते हुए हमारी जुबान रुक जाती थी, अब पता ही नहीं लगता कि जोश से भरकर निन्दा करते रहते हैं।

इसी प्रकार पहले की हुई उच्च गतियां किसी समय याद आकर हमारे पर क्या असर करती हैं, क्या हम उनको छोड़कर कोई घाटा महसूस करते हैं या फिर हंस छोड़ते हैं। या इन उच्च गतियों की याद हमें जोर से हिलाती है, अपने भीतर आया नीच परिवर्तन हमें खटकता है, हमें घाटा अनुभव होता है, दुःख दर्द होता है, शर्मसारी अनुभव होती है, फिटकार पड़ती है, तो हम सौभाग्यवान हैं, हमारे भले की कुछ गुंजाईश है।

समय के अनुसार हमारे भावों की पूंजी बढ़ती या घटती रहती है, क्या हमें इसका भी एहसास है?

हमारी श्रद्धा और उसके सम्बन्ध में हमारी गतियां परिवर्तित होती रहती हैं। हमारी कृतज्ञता भी बढ़ती घटती रहती है। हमारी हमदर्दी वा सेवा के भाव भी इस सम्बन्ध में गतियां करके बढ़ते हैं नहीं तो घटते रहते हैं। हमारा गुस्सा भी या बढ़ रहा है या घट रहा है। क्या हमें उपरोक्त भावों का घटना या बढ़ना दिखाई देता है, अखरता है, महसूस होता है?

जिनको अपने भावों का बढ़ना वा घटना दिखाई देता है, महसूस होता है, अखरता है, वह बहुत सौभाग्यशाली हैं। उनके कल्याण की सम्भावना है।

ऐसे जन ही आगे जाकर आत्म बोध की प्राप्ति के भी अधिकारी हो सकते हैं। उनके जीवन की सफलता की आशा है।

हमारी उच्च या नीच गतियां हमारे आत्मा की नब्ज हैं। उनसे साफ संकेत मिलता है कि हम वा हमारा आत्मा किधर को जा रहे हैं, जो अपने आत्मा की नब्ज पहचानते हैं, उसके ऊपर पहरे की आंख रखते हैं, उनके भले की कुछ उम्मीद हो सकती है, जो अपनी गतियों को नहीं देख सकते, चौकस नहीं रहते, सचेत होकर नहीं चलते, बेपरवाह वा खुश प्रसन्न रहते हैं, उनके भले की, आत्म रक्षा की आशा बहुत कम होती है। आत्म बोध का दर भी उनके लिए बन्द हो जाता है।

एक महोत्सव पर हम तैयारियों में लगे हुए थे। उच्चलोकवासी श्रीमान गुरुवन्त सिंह जी हमारे साथ लगे हुए थे। अन्दर कमरों में पराली बिछा रहे थे। उक्त श्रीमान जी को धूल मिट्टी से खांसी आने लगी। हमारे में से एक सेवक ने कहा कि श्रीमान जी को X-Ray करवाना चाहिए। वह बाज़ार से पान के पत्ते की जड़ भी श्रीमान जी के लिए लेकर आए। अगले दिन भी खांसी उठती रही। मैंने श्रीमान जी को X-Ray करवाने के लिए विनती की। श्रीमान जी हंस पड़े, परन्तु महोत्सव से खाली होकर X-Ray करवाया तो उनके छक्के छूट गए। वह फिकर से सारी रात सो नहीं सके, क्योंकि डॉक्टर ने उन्हें जल्दी ही सैनीटोरियम में जाकर ईलाज करवाने की सलाह दी, उनके फेफड़े रोगी हो चुके थे, उन्होंने फिर बड़ी सावधानी से ईलाज करवाया। इसी प्रकार आत्मा के X-Ray की आवश्यकता है। अपने भावों के विषय में जानने की आवश्यकता है।

एक बार ठोस साधक श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी ने पराए खेत में खड़े-खड़े एक सरसों की गंदल मुंह में डाल ली। साथ ही ख्याल आया कि यह खेत किसी का है। अपने स्वार्थपूर्ण व्यवहार पर इतना दुःख हुआ कि वह मुंह पर थप्पड़ मारने लगे कि यह मैंने क्या कर दिया। देवात्मा की रोशनी में ही हम अपने भावों को देख सकते है। इस रोशनी में हम अपने व्यवहारों को देख सकते हैं।

इस प्रकार अपनी गतियों पर पहरे की आंख रखने वाले, चौकस रह सकने वाले जरूर अपनी योग्यतानुसार अपने आत्मा का भला कर जाते हैं।

(बलदेव सिंह)

मैं मिथ्या मत के चुंगल में, फंसा रहकर खत्म होता,
तुम्हीं ने उसके चुंगल से, मुझे भगवन छुड़ाया है।
न था कुछ बोध पापों का, न मिथ्या मोह की गतियों का,
बस अन्धा-धुन्ध जीवन का, समय अब तक गंवाया है।
मेरा यह आत्मा क्या है, यह क्योंकर होता है विकसित,
बताकर भेद यह मुझको, असल बोधी बनाया है।

* सब से बढ़कर हितकर हृदय की बेहतरी है। *

भगवान देवात्मा ने इस तत्व को प्रगट किया, कि मनुष्य जगत् भी पशु जगत से हि उत्पन्न हुआ है। बहुत से मनुष्यों में यद्यपि कुछ मानसिक शक्तियां ऐसी विकसित हो गई हैं, कि जो और पशुओं में विकसित नहीं हो सकीं, और अनुकूल हालात के प्राप्त होने पर ऐसे मनुष्यों में से कई जातियों के जनों ने विद्या के विचार से धीरे - धीरे अब तक बहुत सी उन्नति भी की है, परन्तु इस सब उन्नति के होने पर भी हम साफ़ देखते हैं, कि निम्न श्रेणी की नाना भाव शक्तियों के द्वारा परिचालित होकर एक पशु औरों के सम्बन्ध में इतनी अनुचित हानियां नहीं करता, जितनी कि कई श्रेणियों के मनुष्य उनकी और औरों की हानियां करते हैं। मनुष्य ने अपने भीतर के नीच भावों से परिचालित होकर और नीच गति परायण बनकर क्या अपने साथी मनुष्यों के लिए, क्या पशुओं और क्या उद्भिद और भौतिक जगत् के नाना अस्तित्वों के लिए जिस प्रकार की हानियों का सिलसिला ज़ारी कर रक्खा है, उसका वर्णन नहीं हो सकता और उस के नाना प्रकार के मिथ्या विश्वास - कि जिन में औरों के भिन्न बड़ी बड़ी और असीम ताकत रखने वाले एक ऐसे कल्पित देवता का विश्वास भी शामिल है, कि जिसे उसके विश्वासी ईश्वर या परमात्मा या खुदा कहते है - केवल यही नहीं कि उस के आन्तरिक जीवन को बदल नहीं सके, और बदल नहीं सकते, बल्कि वह उसकी कई प्रकार की नीच गतियों में सहायकारी प्रमाणित हुए हैं और उसे और भी अन्धकार और अधोगति की ओर ले जाने का कारण बने हैं। जर्मनी के शाहनशाह विलियम ने ईश्वर और मज़हब की पुकार मचाकर योरूप, एशिया और अफरीका में जिस किस्म की लासानी तबाही पैदा कर रक्खी है और सारी दुनिया में उसका हानिकारक असर पहुंचा रक्खा है, उसे कौन नहीं जानता? गवर्नमेंट निस्सन्देह बड़ी मुबारिक चीज़ है और हर देश में उस की बहुत बड़ी आवश्यकता है, परन्तु अच्छी से अच्छी गवर्नमेंट की भी जहां इन्सानों के बहुत से पापों तक कोई रसाई नहीं, वहां उसकी पुलिस या उसकी फौज़ किसी पापी के हृदय में कोई सच्चा परिवर्तन नहीं ला सकती। वह उसके भीतर किसी पाप का सच्चा बोध उत्पन्न नहीं कर सकती। वह कई प्रकार के अपराधों को एक सीमा तक दण्ड के द्वारा रोक सकती है, परन्तु पापियों को उनके पापों का सच्चा बोध देकर उन्हें इन पापों से मोक्ष नहीं दे सकती और उनके भीतर कोई नया उच्च भाव पैदा नहीं कर सकती। उन्होंने कई दृष्टान्त देकर यह सिद्ध किया कि,

(1) आत्मा अपने नाना भावों के द्वारा हि नाना प्रकार की गतियां करता है।

(2) उसका शरीर और दिमाग आत्मा के हाथ में शस्त्र के समान होते हैं, और वह अपने उच्च वा नीच भावों के अनुसार उच्च वा नीच कर्म करता है।

(3) किसी मनुष्य के शरीर को मोटा वा उसके दिमाग को उन्नत करके तुम उसे नीच

गतियों से नहीं निकाल सकते, और उसे उच्च गति परायण नहीं बना सकते। तुम अच्छा आहार और वरज़िश और जल वायु और आरोग्यता वर्द्धक नाना वस्तुओं के द्वारा मनुष्य के शरीर को सेहत वाला और बलवान बना सकते हो, तुम स्कूल और कालेज खोलकर मनुष्य की सोच समझ की शक्तियों और उसकी वाकफियत या इलमियत को बहुत कुछ विकसित कर सकते हो,जिन की निस्सन्देह आवश्यकता भी है: परन्तु इस प्रकार की उन्नति से तुम उसे केवल अच्छा और बलवान शस्त्र दे सकते हो और बस! अब यदि उसका हृदय नीच हो तो वह उन शस्त्रों के द्वारा और भी अधिक खराबी करेगा, जैसा कि एक लम्बे काल से औरों के भिन्न बंगाल के सूबा में कितने ही विद्वान जन भी जिन में ग्रेजूएट और पोस्ट ग्रेजूएट शामिल हैं, डाकू बनकर डाके मार रहे हैं, और उनकी आला तालीम और उनके शरीर के हाथ पैर उनके इस अति नीच कर्म में सहायकारी बन रहे हैं, और तुम इस सत्य को सीख सकते हो, कि शरीर और दिमाग की उन्नति की तुलना में जिस वस्तु की नितान्त आवश्यकता है, और जो वस्तु मनुष्य के लिए सब से बढ़कर हितकर और मूल्यवान है, वह उसके हृदय की बेहतरी है। इसी हृदय की बेहतरी से वह अपने कई प्रकार के सम्बन्धों में बेहतर या हितकर बर्ताव करता है। मनुष्य के लिए हृदय की बेहतरी ही मुख्य वस्तु है।

तब तुम देखो कि जो देवात्मा इस दुनिया में प्रगट होकर सैकड़ों और हजारों आत्माओं के भीतर उच्च परिवर्तन लाए और ला रहे हैं और अपनी देव ज्योति और शक्ति को उन तक पहुंचाकर उनकी नीच गतियों को दमन और उनके भीतर उच्च भाव उत्पन्न कर रहे हैं, वह नेचर के इन्तजाम में अपना क्या रूतबा रखते है!! आत्माओं में अपने आप इच्छा नहीं की कि उनके भीतर ऐसा उच्च परिवर्तन उत्पन्न हो, परन्तु फिर भी देवात्मा ने अपने जीवन व्रत के अनुसार सब प्रकार के आवश्यक त्याग करके और उन तक अपने देव प्रभावों को पहुंचाकर उन में उच्च परिवर्तन उत्पन्न किया है।

देव समाज में जो आत्मा शामिल हैं, वह वही है, जिन्हों ने अपने जीवन में कम वा अधिक इसी प्रकार का आश्चर्य जनक परिवर्तन लाभ किया है। इन परिवर्तन प्राप्त जनों में से एक संख्या ऐसे जनों की भी है, कि जो अपनी ओर से एक वा दूसरे प्रकार की कम वा अधिक देव समाज की सेवा करते हैं, और उन से ऊपर अब थोड़ी सी संख्या ऐसे सेवकों की पैदा हुई है जो नीच गतियों से मोक्ष और उच्च भावों में विकास पाने के कुछ न कुछ आकांक्षी बन गए हैं। ऐसी आकांक्षा का भाव जब तक किसी आत्मा में न जागे, तब तक धर्म जगत् में उसका जन्म नहीं होता।

भगवान् देवात्मा ने फरमाया, कि उन्हें इस पिछली प्रकार के आत्माओं की नितान्त आवश्यकता है, क्योंकि ऐसे आत्मा देव समाज की भावी उन्नति में जहां आप विशेष तौर से भाग ले सकेंगे, वहां उनके हित के लिए भगवान् देवात्मा का महा संग्राम और महा परिश्रम किसी न किसी सीमा तक विशेष तौर से सफल हो सकता है।

(लेख उपदेश पहला भाग)

{कल्याण में माता - पिता दिवस पर विशेष सत्संग}

कल्याण (मलका) जिला बठिंडा (देव धर्म का पुराना स्थान) में पिछले 25 - 26 वर्षों की तरह इस वर्ष भी 24 फरवरी से 26 फरवरी तक एक विशेष सत्संग व माता - पिता दिवस रखा गया। इस सत्संग में कुछ - कुछ जनों को पत्र लिखकर प्रोगाम के बारे में बताया गया। कुछ जनों को फोन द्वारा भी सूचित किया गया। धर्म जीवन व हित स्त्रोत के अंको में नोटिस छपवाकर पहले ही सूचित किया गया।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी वहां स्थानीय सेवकों को लेकर सभा करवाते रहे, जिससे स्थानीय सेवकों के हृदय अच्छी हालत में आते रहे। सभा स्थान पर उचित रूप से सफाई की गई। उचित स्थान पर गुरु महाराज की पवित्र छवि को शोभायमान किया गया। वहां पर पानी आदि का विशेष प्रबंध किया गया। यात्रियों को ठहराने का प्रबंध धर्म सम्बन्धियों के घरों में व एक निकट की धर्मशाला में किया गया। उन्होंने खुशी से यात्रियों को ठहराने की सेवा की।

22 तारीख को ही श्रीमान बलदेव सिंह जी सुखदेव जी के साथ शाम को कल्याण पहुंच गए। 22 तारीख से शाम को इस प्रोग्राम की सभाएं शुरू हो गई। 23 तारीख को बाहर से यात्रीगण आने शुरू हो गए। 5 - 6 जन दोपहर तक बाहर से आ गए।

22 तारीख को शाम को सभा की गई। 23 तारीख को दो सभाएं सुबह शाम की गई। 26 तारीख को माता - पिता के सम्बंध में विशेष सभा की गई। कुल 10 सभाएं की गई।

इन सभाओं से लाभ उठाने के लिए 125 के करीब यात्री कम या ज्यादा सभाओं में शामिल होने के लिए कल्याण पहुंचे।

चण्डीगढ़ से 11 जन, मोहाली से 1 जन, खतौली से 5 जन, यमुनानगर से 1, संगरूर से 1 केसुपुरा व मल्लेका से 37 जन, पदमपुर व गज सिंह पुर से 13 - 14 जन, बूंगी (गुरूहरसहाय) से 3 जन, मोगा से 3 जन, समराला से 2 जन, तलवंडी भाई से 1 जन, महियांवाली से 5 जन, रामपुरा फूल से 1, घुम्हारा से 1, कोठा गुरू से एक, डबवाली से तीन, मसीता से 1, थराजवाला से 2 जन दिल्ली से 1 जन, मानसा से 1, गोनियाणा मंडी से 10 जन, बठिंडा से 1 जन, जंडवाला से 1 जन, फकरसर से एक जन, सब जन बसों कारों व कैंटर आदि में बाहर से पहुंचे जो बहुत ही सुन्दर नज़ारा था। स्थानीय सेवक सेवकाओं के भिन्न दूसरे गांव वासी भी अच्छी गिनती में पहुंच गए। 26 तारीख को बाहर खुली जगह पंडाल बनाया गया।

इस शुभ अवसर पर सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी व बलबहादुर सिंह जी करवाते रहे। भजनों का गान श्रीमान जगदीश जी करते रहे।

स्थानीय सेवकों ने भी बहुत चाव भाव से यात्री जनों की सेवा करके खुशी प्राप्त की। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी सभाएं करवाकर नाना प्रकार की सेवा करके बहुत खुश रहे और सभाओं से भी खास प्रभावित होते रहे।

लंगर का प्रबंध श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के घर में Special टैंट लगाकर किया गया। उनके बेटे हरदीप व उनकी धर्म पत्नी श्रीमति रूपिन्द्र कौर जी ने और उनकी पुत्र वधु रमन ने बहुत सेवा की। उनकी धर्मपत्नी बावजूद बहुत उलझन व विरोधी सेहत के भी लंगर में बहुत सेवा करती रही। ब्रेकफास्ट का अपने अपने घरों में ठहरे यात्रियों के लिए बहुत उचित रूप से प्रबंध धर्म सम्बन्धियों ने किया। सब

यात्री इस पहलु में बहुत सन्तुष्ट रहे।

सभाओं का संक्षेप वर्णन इस प्रकार है:-

इसी दिन शाम को श्रीमान जी और श्री सुखदेव जी चण्डीगढ़ से कल्याण पहुंचे। वहां रात को एक सभा करवाई गई। इसमें देवधर्म की महानता और मनुष्य जीवन के लिए इसकी परम आवश्यकता का ब्यान किया गया।

23 तारीख सुबह 9 बजे फिर एक सभा रखी गई। यह सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें देव समाज के साथ जुड़ने के लाभ व न जुड़ने की हानियों का भावपूर्ण ब्यान किया गया। बार-बार यह नक्श करने की कोशिश की गई कि मनुष्य के सर्वपक्षों में विकास के लिए देवधर्म का सम्बंध अनिवार्य हैं। दिन में एक जन से घंटा भर हितकर बात की गई और पुस्तकें पढ़ने के लिए दी गई। दोपहर बाद बठिंडा से सात जनों की पार्टी इधर पधार गई। अम्बाला कैंट निवासी श्रीमति बलबीर जी शर्मा और बठिण्डा निवासी बीबी शीला जी कल्याण के मन्दिर के दर्शन करके प्रणाम करके वापिस कार पर चली गई। कार का प्रबंध श्रीमान मेहर सिंह जी ने जोर देकर अपनी तरफ से किया। श्रीमति बलबीर शर्मा जी ने 500 रू० और शीला जी ने 100 रू दान में दिया। मल्लेका से आए हुए जनों के साथ घण्टों हितकर बातचीत होती रही।

रात को 8 बजे फिर सभा की गई :- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें 25-30 जन आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि संसार में हजारों धर्म और सम्प्रदाय धर्मों के प्रचार में जोर-शोर में लगे हुए हैं मगर इस सब के होते हुए जुर्म और पाप कतल और बलात्कार आदि बढ़ रहे हैं। हस्पताल कचहरियां, जेलें भी बढ़ रही हैं। ऐसा क्यों हैं? धर्मों के पास किस चीज की कमी है। अगर हजारों लाखों और धर्म पैदा हो जाएं तो क्या इन्सानियत का सुधार हो सकेगा? हरगिज नहीं।

जब तक इन्सान को उसकी बर्बाद करने वाली अपने अन्दर की शक्तियां भयानक रूप में नज़र नहीं आतीं तब तक इन्सान का सुधार असम्भव है। दुनिया के तमाम धर्मों के पास ऐसी कोई योग्यता नहीं और न ही कभी यह योग्यता होना सम्भव है कि जिससे वह मनुष्य को उसकी बर्बाद करने वाली भयानक शक्तियों से साक्षात परिचित करवा दें। इसलिए धर्मों के सब फायर फोके सिद्ध हो रहे हैं। विकास क्रम में देवात्मा ऐसी रोशनी और अद्भुत तेज लेकर प्रकट हुए हैं। देवात्मा की अद्वितीय ज्योति में यह सामर्थ्य है कि वह अधिकारी हृदयों में उन्हें बर्बाद करने वाली शक्तियों और कारणों को उन पर उज्जवल कर दे और उनका हो रहा भंयकर विनाश साक्षात दिखा दे और उस विनाश से बचने के लिए संघर्ष और संग्राम पैदा कर दे। सभापति जी ने इस प्रकार अपने नीच जीवन को देखने का और उससे निकलने का अपना निज का हृदय स्पर्शीय उदाहरण पेश किया, जिससे बहुत हितकर वातावरण पैदा हुआ और अधिकारी हृदयों का ध्यान अपने-अपने नीच जीवन की तरफ जा रहा था। यह सभा अच्छी प्रभावशाली थी।

24 तारीख को सुबह ही खतौली मेरठ आदि के स्थानों से पांच जन पधार गए। 9 बजे की सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि विश्व को पशु नहीं समझ सकते केवल मनुष्य के अन्दर ऐसी क्षमता है कि वह नेचर को एक सीमा तक जान सकता है। मनुष्य के लिए अपने माता-पिता, महान जनों, उपकारी जनों को केवल अक्ल समझ से जानना मुश्किल है। उच्च भावों से ही उपरोक्त जनों का सही रूप जाना जा सकता है। श्रद्धा, शुक्रगुजारी के बगैर मां-बाप उपकारी जनों और उच्च जीवन धारी वजूदों को सही देखना असम्भव है। बहुत सुन्दर ठोस उदाहरण पेश करके

समझाया गया कि किस प्रकार उच्च भावों के बिना बुद्धि, विद्या रखकर और अन्य योग्ताएं रखकर भी इन्सान दूसरों को सही नहीं देख सकता। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने चार पांच नीच जीवन धारी बेटों के उदाहरण पेश किए कि जो अपने माता-पिता को किसी अंश भी देख न सके व घातक सिद्ध हुए।

24 फरवरी दोपहर 4.30 बजे सभा की गई इसमें बहुत से यात्री पदमपुर, मोगा, डबवाली, यमुना नगर, चण्डीगढ़ आदि स्थानों से पहुंच गये। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि नेचर में सूक्ष्म असरों का बड़ा भारी खेल जारी है जो हमें दिखाई नहीं देता। उदाहरण देकर गैस, मिर्च, लहसन, आदि के असरों के प्रभाव को समझाया गया। भले व बुरे असरों के अलग-अलग नतीजे के बारे में बताया गया। देवात्मा के अद्वितीय असरों के कारण जो हृदय स्पर्शीय परिवर्तन आए हैं, उन्हें सरल शब्दों में समझाया गया और सभा बहुत प्रभावशाली बन गई। सब हाजरीन प्रभावित हो रहे थे।

रात 8.30 बजे फिर सभा की गई। मल्लेका, केसुपुर, आदि से 35 जन और शामिल हो गये। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि शारीरिक रोग मनुष्य के लिए दुखदायी होते हैं, कमजोर व बदसूरत बनाते हैं, और शरीर का भी नाश करते हैं। इसी प्रकार आत्मा के भी रोग होते हैं। उनका भी आत्मा के लिए वैसा ही परिणाम होता है। देवात्मा के दर पर आत्मा के रोग नज़र आते हैं व देवात्मा के दर पर उन रोगों से बचने की शक्ति भी मिलती है। किस तरह रोगी रूहें बचाई जाती हैं, कई उदाहरणों से समझाया गया।

25 फरवरी सुबह की सभा में और भी अच्छी हाजरी हो गई। घुमयारा व कोठागुरू स्थानों से कुछ जन पहुंच गये। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने विकास क्रम के बारे में समझाया कि कैसे चारों जगतों में विकास हो रहा है, बुरी रस्मों रिवाज जैसे सती प्रथा, गुलामी प्रथा आदि खत्म हो रही हैं। स्त्री जाति तरक्की कर रही है। जैसे पशु अपने रोगों को नहीं जान सकता है, वैसे ही मनुष्य अपने आत्मा के रोगों को नहीं जानता। गुरू महाराज मनुष्य आत्मा के रोगों को दिखाते हैं। मनुष्य अपने अन्दर खुद शेर, बघेरे पाल रहा है। जो उसी को ही चबा कर खा जाते हैं। शराब या नशे के भूत पाल-पाल कर अपने को चमेट लेता है। कामवासना, अहंकार, धन, लोभ को पालता है। उदाहरणों से बताया कि उपरोक्त नीच अनुराग किस प्रकार मनुष्य का भयानक विनाश करते हैं। ये सभा लगभग दो घण्टे चली जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने प्रभावित होने का अवसर पाया।

शाम को 4 बजे श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सभा करवाई। इसमें बताया गया कि उच्च भावों का नाम धर्म है। सम्मान भाव के बगैर कोई धर्म नहीं होता, फिर सभापति जी ने हाज़रीन से सम्मान भाव की वर्तमानता के लक्षण पूछे। सम्मान भाव के बहुत से लाभ व घटनाएं बताई गई जिससे बहुत हितकर वातावरण बना, हाज़रीन बहुत धन्य-धन्य हो रहे थे व कितने जन पाक आँसु बहाते रहे।

रात के 8.30 बजे फिर एक सभा की गई, इसके सभापति श्रीमान बलबहादुर जी थे। इस सभा में बहुत अच्छी हाजरी थी। सारी सभा का स्थान खचाखच भरा हुआ था। इसमें बताया गया कि धर्म 'पर' के सम्बन्ध में काम आने पर शुरू होता है। सम्बन्धों में ही पाप है। सम्बन्धों में ही धर्म सम्भव है। जहाँ सम्बन्ध हितकर मीठे, परस्पर सेवाकारी हैं, वहा धर्म है। सुन्दर उदाहरण पेश करके समझाया गया। भले सम्बन्धों के चित्र खींचे गये। सभा काफी प्रभावशाली थी।

माता - पिता सम्बन्धी विशेष सभा

26 फरवरी इतवार का दिन यह सभा सुबह 8.30 बजे की गई। इसके लिए नया पंडाल तैयार किया गया। नई कुर्सियां आदि लगाई गई। गुरु महाराज की छवि ऊंचा स्थान बनाकर सुसज्जित की गई। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। पहले श्रद्धा विषयक भजन "अद्वितीय जीवन व्रतधारी" श्रीमान जगदीश जी के साथ मिलकर गाया। गुरु महाराज का डबल हार द्वारा अर्चन किया गया। देवस्तोत्र का गान और व्याख्या की गई। सभा की सफलता के लिए प्रार्थना की गई। इसके बाद "श्रद्धा भाजन मात - पिता जी" गीत का गान किया गया। इसके बाद सभापति जी ने ब्यान किया कि नेचर में विकास का नियम काम कर रहा है। मनुष्य जगत में भी विकास हो रहा है। इसी क्रम से नई से नई योग्यताएं लेकर हस्तियां पैदा हो रही हैं। देवात्मा अद्वितीय शक्तियां और योग्यताएं लेकर पैदा हुए हैं। उनकी शिक्षा और कारज अद्वितीय है। उन्होंने फरमाया है कि बेशक मनुष्य पशुओं से ही विकसित हुआ है और कमाल की उन्नतशील मानसिक शक्तियां रखता है परन्तु कितने अंगो में कई मनुष्य पशुओं से बहुत नीचे और निकृष्ट हैं। इस सच्चाई को बताते हुए मनुष्यों में नशा अनुराग, स्वाद अनुराग काम अनुराग की लीला का वर्णन किया गया।

इसके बाद बताया कि मनुष्य पशुओं की तरह माता - पिता से कोई सम्बन्ध महसूस नहीं करता। उच्च भावों से अन्धा है। इसके सम्बन्ध नारकीय हैं। इसके उदाहरण पेश किए गए। देवात्मा किस प्रकार सम्बन्धों में जीने की शिक्षा देते हैं। माता - पिता का मानव जीवन में स्थान क्या है? इसके विषय में बताया गया। उनसे बढ़कर मनुष्य के लिए कोई ज्यादा कुर्बानी नहीं कर सकता परन्तु वही अपनी सन्तान के हाथों बेहद सन्तप्त हैं। किस प्रकार भगवान देवात्मा ने हम नारकीय जीवों को माता - पिता का रूप दिखाया है और एक - एक का सम्बन्ध उनके साथ स्वर्गीय बनाया है। देवात्मा मनुष्य समाज में नया युग ला रहे हैं। घटनाओं द्वारा माता - पिता के सम्बन्ध में देवात्मा के स्वर्गीय कारज का वर्णन किया गया। अच्छा वातावरण बन रहा था। सन्नाटा छाया हुआ था। दो - अढाई सौ स्त्री - पुरुष मन्त्र मुग्ध होकर सभा से लाभ उठा रहे थे। कितने जन गुरु महाराज के और अपने माता - पिता के चरणों में झुक रहे थे। कितने जन आंसू बहा रहे थे। सभापति जी ने हाजरीन से अपने माता - पिता के सम्बन्ध में भावों का प्रकाश करने की प्रार्थना की। इस पर निम्नलिखित जनों ने खड़े होकर या लिखकर अपने भावों का प्रकाश किया।

भाव प्रकाश: - श्रीमान बलबहादुर सिंह जी: - गुरु महाराज रोशनी देते हैं व हमारा अन्धकार दूर करते हैं। रोशनी चीजें दिखाती है, रोशनी खुद नज़र नहीं आती। मेरी माता जी की आँख का मिन्टों में ईलाज हो गया, हमें कुछ पता नहीं लगा। तब से आज तक आँख ठीक है। हमारी हृदयों की आँखों का यहां ऑपरेशन होता है। सत्गुरु की रोशनी ने मेरा ईलाज किया। मुझ अन्धे को नई दुनिया नज़र आई। सत्गुरू को धन्यवाद देता हूँ। मैं पुकार मचाता हूँ कि दुनिया वालो मन की आंखें ठीक करवा लो। गुरु उनका ऑपरेशन करते हैं। करवा लो। गुरु ने

मुझे खज़ानों से लाद दिया है। जिस का ब्यान नहीं हो सकता। यही मुंह से निकलता है कि तेरे फैज़ो का ब्यान नहीं हो सकता, मेरे दिल के सारे उदगार गुरु को धन्यवाद देते हैं। मुझे इस बात का फख़र है कि मैं फरिश्ता जैसे बाप का बेटा हूँ। मेरे। पिता जी अपने पिता के भगत बेटे हैं। उन्होंने मेरी अन्धी नानी की बेहद सेवा की है।

उनकी ज़मीन लेना गवारा नहीं किया। दिल के मरीज होकर भी दूसरों के लिए काम आते हैं, हमारा मुलाजम चारा काट रहा था। यह उनकी मदद कर रहे थे। उसका दुःख देख नहीं सके। किसी को दुःख दे नहीं सकते। दूसरों का दुःख बांटे बगैर रह नहीं सकते। मेरा बेटा मुझे Australia आने को कहता है। मैं कहता हूँ कि मैं अभी नहीं आ सकता। मैं फरिश्तों (मां-बाप) को छोड़कर नहीं जा सकता। वह कहता है कि वहां झीलें, समुद्र बहुत ही सुन्दर हैं। वहां बहुत सुन्दर नजारे हैं। जिस सुन्दर दुनियां में मां-बाप के पास मैं रहता हूँ, उसका उसको पता नहीं। इस जगह स्वर्ग है। मां-बाप के आगे सिर नहीं उठाता, ऊंचा नही बोलता, रूखा नहीं होता, उनको टोकता नहीं हूँ। आगे के लिए भी ऑपरेशन हो गया है। अपने पहले अपराध नज़र आते हैं। अब भी कभी कभी ऐसी बातें हो जाती है कि इनको तकलीफ हो जाती है। इन्होंने कहा कि जैतो में कोई Eye-Surgeon है, उसको आंखे दिखाएं। मैंने कहा कि वह P.G.I. से बड़े नहीं। मैंने समझाने की कोशिश की जब मैं नहीं समझा सका तो मैं वहां पर भी जाने को तैयार हो गया। चलते वक्त कई गल्तियां मुझ से हुई। सर्दी में कार की बजाए जीप में ले जाने की, Over-coat के ऊपर गर्म कम्बल जो पिता जी चाहते थे, वह नहीं दिया। कुलदीप जी के घर कम्बल उन्हों ने मांग लिया, मैंने मना कर दिया। इस पर उन्होंने कहा कि हुक्म नहीं रहा। मुझे उसी दिन लग रहा था कि मेरे से बहुत गल्तियां हुई हैं। इसलिए मैं इनसे क्षमा मांगता हूँ, दुःखी होता हूँ, सत्गुरू मिले हैं जो दिखाते हैं, कि यह नीचता बन्द कर दो। मेरी नज़र और साफ हो सके। मुझे उनके गुणों की व कुर्बानियों की बहुत सुन्दर झलक दिखाई दे। और अधिक दिखाई दे। अपने गुनाह दिखाई देते हैं। सत्गुरू की ज्योति की सब को बेहद जरूरत है। ऐसे रूहानी चिकित्सक को जिस कदर अधिक से अधिक धन्य-धन्य कहूं उतना ही कम है। माता-पिता को कम से कम सताऊं ऐसी कामना है।

श्रीमान सीता राम जी संगरूरः- सन 1968 से सेवक बना हूँ। उस समय से कोई महोत्सव नहीं छोड़ा और यह सत्संग बहुत सुन्दर और प्रभावशाली हुआ है। मुझे अपनी धर्म पत्नी के सम्बन्ध में अपनी सख्ती और अकड़ नज़र आती है। मेरे बेटे ने बाहर की नौकरी छोड़ दी और हमारी सेवा का ख्याल करके वापिस घर आ गए। वह डॉक्टर होकर भी हमारी सेवा करते हैं। मेरी शराब और मीट छुड़ाने के लिए मेरे धर्म सम्बन्धी 2 वर्षो तक संग्राम करते रहे। मेरे घर की काया पलट दी। बच्चा डॉक्टर बन गया। छह लड़कियों की शादी की है। गुरु की कृपा से धन्य-धन्य रहता हूँ।

श्रीमान जगीर सिंह जी केसुपुराः- सभा करवाने वाले उपकारी जनों के आगे नतमस्तक होता हूँ। महान हस्तियों ने माता-पिता दिखाए हैं? पत्नी दिखाई है। मैं घर में मुसीबतों की जड़ था। समझता दूसरों को खराब था। माता जी बीमार

हो गई। मरने के करीब थी। डाक्टरों ने बचा दिया। अब वह मेरे लिए मुबारक व पवित्र मन्दिर बन गई। मैंने बचपन से ही उनको सताया है। आज तक भी सता जाता हूँ। उनके अन्दर दया भाव है। वह दूसरों के लिए हिलने लग जाती हैं। पिता जी की खेती में मुशक्कत का नज़ारा याद आता है, तो उनके आगे झुक जाता हूँ। आज से सोच रहा हूँ कि उनका कमरा खुद साफ किया करूंगा और उनका बिस्तर खुद बिछाया करूंगा। अपने अन्दर की घंमड और घृणा को और मारूंगा। पिता जी के जूतों से डरता था। मैं दुष्ट, गन्दा, मैला और नीच था, गुरु महाराज ने बचा दिया। अब हर लड़की बहन नज़र आती है। ऐसा चाहता हूँ कि अपनी बेटियों व भाई को गुरु दर से जोड़ संकू। मुझे शक्ति मिले। मां - बाप की सेवा करने में लगूंगा। श्रीमान जी की लम्बी उमर के लिए शुभ कामना करता हूँ। गुरु शिक्षा से लाभ उठाता हूँ। बुराई नजर आती है तो बच जाता हूँ। मिथ्या पन नज़र नहीं आता।

सहायकारी शक्तियां बचाती हैं। मैं मासाहारी, शराबी, मछलियां खाने वाला गन्दा वजूद था। छुरा रखता था। कसाई था। वह छुरा सब को दिखाने को दिल करता है। गुरु ने मेरे हाथों से छुड़ाया है। मैं घमण्ड का पुतला अड़ जाने वाला और मरने पर तुला हुआ था। इस गन्दे व पलीत को किसी हद तक धो डाला है। श्रीमान माहना सिंह जी को ध न्यवाद देता हूँ व जिनकी बदौलत हम सब का भला हुआ है। श्रीमान सुखदेव जी ने भी बड़ा उपकार किया है। सब को प्रणाम करता हूँ।

श्रीमान गुरू देव राज जीः - यह दर बरकतों का दाता है। बहुत ही ऊंचा और सुच्चा है। हम कमज़ोर हैं। नीच सुखों के गुलाम हैं। ज्यादा अपना हित नहीं कर सकते। सन् 2000 से माता - पिता का कुछ - कुछ रूप नज़र आया है। आज नानी जी के उपकार नज़र आ रहे हैं, कि इन्होंने मुझे ऐसी सुच्ची, नेक और पाक धर्मपत्नी दी है। मैं नीच और निकम्मा बहुत गलत बर्ताव दे जाता हूँ। मेरे ताई जी कुछ दिन से हमारे यहाँ आए हुए हैं। वह बता रही थी कि जब हम लोग पाकिस्तान से उजड़ कर आए तो बड़ी मुश्किल से जान बचाई। पिता जी, माता जी चार आने की दिहाड़ी पर मजदूरी करते थे। फिर फिरोज़ाबाद में ज़मीन मिली। मेरी माता जी और ताई जी ने 17 एकड़ धान अपने हाथों से लगाया और फसल तैयार की। गुरु दर पर आने से पहले हम यह कह देते थे कि आप ने क्या किया है। उनको दुःखी करते थे। अब प्रणाम तो करने लगा हूँ। सेवा का ध्यान कम है। सिर्फ मत्था टेकने से आशीषों की झड़ियां लगा देते हैं। मेरी प्रार्थना है कि मुझे मेरे माता - पिता का उपकारी रूप नज़र आता रहे और उनकी सेवा कर संकू। फिर उन्होंने कहा कि इस साल अब जाकर ताई जी व माता जी को कुछ भेंट दूंगा।

मोनू जी (चावला) मैंने मां को बहुत दुःखी किया है। भाई और पिता को बहुत दुःखी किया है। बहन को दुःख दिए हैं। मुझे मरने से बचाया गया है। मुझे कुछ अब नज़र आने लगा है। मैं मां - बाप को प्रणाम ही नहीं करता। कभी उनके आगे नहीं झुकता। डा. मन्सा सिंह जी व श्रीमान जी का धन्यवाद करता हूँ कि जिन्होंने मुझे इस दर से जोड़ा है।

श्रीमति भरपूर कौर जी (मोगा): - मुझे इस जगह पर आकर कुछ न कुछ जरूर मिलता है। मुझे इस जगह आकर मां नजर आई है। भाईयों से मिलकर मां को अपने पास लाने को दिल करता है। उनकी सेवा करने की जरूरत

महसूस हुई है। मां को पिता जी से कभी लड़ते नहीं देखा। उनको कभी उदास और रोता नहीं देखा। मां के पास पहुंच कर उनके लिए कुछ न कुछ करूंगी। बगैर किसी लालच के केवल मां की सेवा के लिए ही मां को अपने पास रखना चाहती हूँ। (उनका भाव बहुत सुन्दर था व हृदय बहुत भरा हुआ था जो-जो अधिकारी हृदयों को झुका रहा था)। श्रीमान जी से बेनती है कि हमारे यहाँ सत्संग जरूर रखा जावे।

श्रीमान तेज राम जी शर्मा (मोगा):- गुरु का दर एक महान बरकत की चीज़ हैं। हमारा ध्यान माता-पिता की तरफ फेरा गया है। मैं इतफाक़ से ही देव समाज में आ गया। वहां से मेरे भले का द्वार खुलता गया। सन् 1949 से उच्च आत्माओं के दर्शन करता रहा। सभाएं सुनी जीवन का मार्ग नज़र आया। मेरे व्यवहार तब से बदल गए। पिता जी मेरा बहुत आदर करने लगे। वह तम्बाकू पीते थे। उनको 52 वर्ष की आयु में दमा हो गया। समाज में आकर उनका तम्बाकू छुड़ा दिया। वह 9 वर्ष तक जीते रहे। पिता जी को रोजाना प्रणाम करता था। एक बार चौपाल में प्रणाम किया। लोगों ने पिता जी को कहा कि आपका बेटा बहुत अच्छा है। लोगों ने पूछा कि पंडित जी आपका गुरू कौन है? पिता जी ने कहा मेरा बेटा ही मेरा गुरू है। पिता जी को सेवक बना दिया। माता-पिता की सेवा करके धन्य-धन्य होता रहा। पिता जी मेरे पर बहुत विश्वास करते थे और सब भाईयों से अधिक मेरे पास ठहर कर खुश रहते थे।

श्रीमान मेहर सिंह जी मोहाली:- गुरु दर की बरकतों का ब्यान नहीं हो सकता। गुरु से केवल एक ही इच्छा है कि गुरु से ज्यादा से ज्यादा जुड़ा रहूं। गांव से एक पड़ोसी का बेटा इधर संगत में आया हुआ है। उसे देखकर बहुत खुशी मिली है। इसके पिता जी बचपन में मर गए थे। मां ने और चाची जी ने लोगों के खेस और दरियाँ बुन-बुन कर दिन रात एक करके बच्चे को पाला है। इस बच्चे पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। चाची, मां, दादी इन सब का एक सहारा है। काश! इसकी रक्षा हो। मुझे पूरी उम्मीद है कि इसका भला होगा। मुझे अपने माता-पिता की जितनी सेवा करनी चाहिए थी, कुछ भी नहीं की। अब मैं अपनी बुआ जी की सेवा करता हूँ। उनके चार बच्चे हैं जो उनकी सेवा नहीं करते व रोटी नहीं दे पाते। अपनी धर्मपत्नी की माता जी की सेवा कर के खास खुशी मिलती है। सब्जी, फल उनसे पूछ कर लाता हूँ। मेरे ससुर जी ने चाहा था कि मैं अपनी सास को 100 रू हर माह दे दिया करूं। मुझे देना याद नहीं आता था। अब उन्हें पांच सौ रूपये भेंट करके बेहद खुशी मिली है। खुशी दूसरों को खुश करके ही मिल सकती है। ऐसी खुशी की राह पकड़ सकूं। बच्चों के साथ बड़ा अच्छा सम्बन्ध बन गया है, उनको प्रणाम करने को दिल करता है। काश! गुरु से जुड़कर ज्यादा से ज्यादा सच्चा स्वर्ग पैदा कर सकूं।

श्रीमान कुलदीप सिंह जी (कल्याण):- मुझे महसूस हो रहा था कि मैं बहुत खुशकिस्मत इन्सान हूँ कि मेरी माता जी 95 वर्ष की आयु में आज भी हमारे दरम्यान मौजूद हैं। बचपन में जब सब बच्चे पैदल स्कूल को जाते थे तब मुझे साईकिल मिला हुआ था। मुझे सबसे अच्छा खाना मिलता था। सबसे अच्छे कपड़े मिलते थे। पिता जी ईमानदार व बहुत सेवाकारी थे व पवित्र भी थे। गुरु ने समाज दिखाई है। यह श्री

पिता जी की देन है। पिता जी की कृपा से हम बुराईयों से बच गए। उनके चरणों में दिल झुक गया। हम 10 मैंबर एक घर के इस सभा में बैठे हैं। श्रीमान जी से जो सेवा पाई है वह सामने आती है। उन्होंने माता - पिता का रूप दिखाया है। उनके चरणों में दिल झुकता है।

हरदेव सिंह जी (केसुपुरा):- महोत्सव से बहुत लाभ हुआ था। उसके बाद कुछ समय अच्छा निकल गया। T.V. में आया था कि नए वर्ष में अच्छा संकल्प करो। मैंने नए वर्ष के लिए सकंल्प किया कि मैं हर रोज माता - पिता को प्रणाम करूंगा। मेरा वह साधन चल रहा है। पिता जी को आगे से ऊंचा नही बोलूंगा। दो नए जनों ने खैनी (जर्दा) खाना छोड़ दिया। एक और नए जन ने बीड़ी शराब माँस - अण्डे आदि सब छोड़े।

एक प्रौढ उम्र के व्यापारी ने आठ दिन के लिए शराब छोड़ी।

एक नए जन ने खड़े होकर कहा कि मैं घर में थानेदारी करता हूँ, उसको छोड़ने की कोशिश करूंगा।

डबवाली से आए एक जन ने एक माह के लिए शराब मास आदि छोड़ने की खड़े होकर प्रतिज्ञा की।

श्रीमान जीत सिंह जी:- गुरु महाराज नई आंख पैदा करते हैं। पिछले महोत्सव से जो लाभ हुआ जो घर में स्वर्ग पैदा हुआ, जो उच्च रस मिलने लगा है, उसका ब्यान नहीं हो सकता। एक बच्ची के परिवार से मन मुटाव था। बच्ची रूठी हुई थी। वहाँ अनमेल दूर हुआ। किस प्रकार सेवा और मेल मिलाप पैदा हुआ वह सब का हृदय स्पर्शीय ब्यान किया। दो व्यसनी जनों के नशे छुड़ाए हैं। जिनमें से एक जन ने नशों के ऊपर 40 एकड़ ज़मीन फूंक दी और खुद भी मर गए। उनके बच्चे रुल रुला कर मर गए। वह आटा मांगने आए। उनकी हालत का ब्यान किया।

1.30 बजने को हो रहा थे। सभापति जी ने उपस्थित सन्तानों को अपने - अपने उपस्थित माता - पिता को फूलों के हार पहनाकर प्रणाम करने की प्रार्थना की। इस पर दर्जनों सन्तानों ने फूलों के हार लेकर अपने - अपने माता - पिता को पहनाकर उनके चरणों में सिर रखकर प्रणाम करने शुरू किए।

सबसे पहले श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने अपने बुर्जुग पिता जी व माता जी के चरणों में उन्हें हार पहनाकर भूमि पर सिर रखकर प्रणाम किया। इस प्रकार प्रणामों के साधनों द्वारा नया स्वर्ग पैदा हो गया। कई नौजवानों को जिन्दगी में पहली बार ऐसा साधन करने का अवसर मिला। ऐसे सुन्दर वातावरण में प्राय: सब के हृदय खुशियों से उछल रहे थे। यात्री जनों ने खुशी - खुशी लंगर के लिए दान देना शुरू किया।

यात्रियों को और बहुत से और जनों को अच्छा खाना और हलवा आदि बांटा गया। बहुत से जनों ने ऐसे समागम में बार - बार पहुंचने की प्रेरणा हासिल की। कितने जनों का अपने जीवनों की तरफ ध्यान गया और अपने एक एक बुरे व्यवहार से बचने के धक्के महसूस किए। इस प्रकार यह समागम किसी न किसी अंश में बहुत हितकर और लाभकारी प्रमाणित हुआ। इस सब के लिए जिस प्रकार गुरु महाराज, सहायकारियों और सेवाकारी धर्म सम्बन्धियों को धन्यवाद दिया जावे वह कम है।

(हाजरीन में से एक)

आत्मिक मौत से बचाया है।

मेरे बहुत श्रद्धा और सन्मान के योग्य श्रीमान जी और बहन जी,

सत्य देव की जय।

श्रीमान जी, मन में बार बार ख्याल आता है कि हर महीने कम से कम एक पत्र अवश्य आपकी सेवा में लिखा करूंगा। आपसे हमने जितनी सेवा पाई है, उसका वर्णन करने लगूं तो शायद ग्रन्थ लिख दूं। आप हमारी जिन्दगी में उस समय आए, जब हम आत्मिक तौर पर मौत के करीब जा चुके थे। जिन्दगी में अध्यात्मिक तौर पर अन्धेरा ही अन्धेरा था।

मेरे और मेरे परिवार के बहुत सन्मान योग्य, उपकारी और हमदर्द, जो हमारे लिए बेअन्त प्यार रखते थे (मेरा भाव श्रीमान परलोक वासी डाक्टर इकबाल सिंह जी से है) जो दुनियवी सफर के आखीर में जाते जाते हमारा इतना भला कर गए कि हमें आपके हवाले कर गए। उसके बाद आपने हमें कैसे सम्भाला, उसको हम केवल महसूस ही कर सकते हैं, कैसे आप हमारे पास आकर, मच्छरों में रातें काटकर हमारे भले के लिए सभाएं करवाते रहे और हर मोड़ पर हमारा मार्ग दर्शन करते रहे।

श्रीमान जी, मुझे दुःख है कि हमने आपकी मेहनत को सफल नहीं किया। मैं लिखते हुए यह शर्म महसूस करता हूँ कि बेटी की शादी के लिए आपके दिल में कितनी तड़प थी कि शादी के समय जीवों का कत्लेआम न होवे, पर अफसोस ---कि हमारा मान्सिक बल ही इतना कमज़ोर था कि हम इसे रोक न सके। इस घटना ने पता नहीं आपको कितना दुःख पहुंचाया होगा। श्रीमान जी, सत्गुरु महाराज के मिशन में हमारे जैसे सेवकों का होना भी एक दुखांत लगता है। बेटी की शादी के बाद मुझे ऐसा लगता है कि जैसे हम गुरु महाराज की बरकतों से महरूम हो गए हैं। कभी कभी मैं अपने आपको यतीम अनुभव करता हूँ।

ऐसे लगता है, जैसे मेरे चारों ओर से सुरिक्षत घेरा ही टूट गया हो। कल्याण सत्संग पर जाकर भी मैं भाव प्रकाश नहीं कर सका, ऐसे लगता था जैसे मैं कोई ड्रामा कर रहा हूँ।

श्रीमान जी, आपकी महानता आगे सिर झुकता है, आपने यह सब होने के बावजूद भी हमारा पीछा नहीं छोड़ा। हमारा परिवार आपके उपकारों को पीढ़ियों तक नहीं भुला सकेगा। गुरु महाराज के दर से जुड़कर हमने बेहद बरकतें पाई हैं, ज़मीन से उठकर जैसे आसमान तक पहुंच गए हैं।

आपके आगे बेनती है कि पहले ही की तरह हमारे सिर पर अपनी मेहर का हाथ रखना। जैसे आपको बेनती की थी अपने व्यस्त समय से समय निकाल कर हमारे घर में सत्संग रखने की तारीख बांध कर बताने की कृपा करें, हमें स्वीकार होगी।

गुरु घर का तुच्छ सेवक
अवतार सिंह (मोगा)

आदरणीय श्रीमान बलदेव सिंह जी,

आपको मेरा नमस्कार, श्रीमान जी मैं इस बार कल्याण नहीं आ सकूंगा। मेरी माता जी और बहिन जी आ रही हैं। श्रीमान जी मैं सोचता हूँ की मुझे अब तक अपनी कमी नज़र क्यों नही आई। मैं कई धर्मो में गया मैंने कई मंत्र अनुष्ठान रखे दिन में 30 हजार बार मंत्र का जाप करना, 40 दिन तक मंत्र जपना उसके अलावा रोजाना एक हजार बार मंत्र जपना मगर नीचता, कभी नज़र नहीं आई।

मिथ्या में जकड़े रहे और अपने को धार्मिक कहलाता रहा। उसके बाद औरों का ध्यान करने लगा कुछ - कुछ ओशो की किताबें पढ़नी शुरू कर दी और खाओ पीओ मौज करो के सिद्धान्त पर चल पड़ा।

मेरा आत्मिक पतन हो गया, मैं गलत संगत में थोड़ा - थोड़ा पड़ने लगा। शराब पीने पिलाने लगा अपने मित्रों के साथ हंसी मजाक में लड़कियों को तंग करना उनसे छेड़ - छाड़ करना आदि आरम्भ हो गया।

बईमानी करना लोगों के साथ चुगली करना लड़ाना, लोगों को वक्त पर आने जाने का वायदा करके वक्त पर न आना, ये कमी मुझे 9 से 15 नवम्बर की आपकी सभा में नज़र आई। मैं नीच इन्सान हूँ। अभी कमियां मुझ में भरी पड़ी है। जो अभी नज़र नहीं आतीं। सुबह - शाम भगवान देव आत्मा जी के कर्मचारियों का जीवन चरित्र पढ़ता हूँ मगर सभा में नहीं जाता हूँ। मगर कुछ भी कहो मुझे देव धर्म न मिलता तो शायद मैं शराबी, चोर, बईमान हमेशा के लिए हो जाता। मैं धन्यवाद करता हूँ आपका, डॉक्टर. जी का, भगवान देव आत्मा जी का और सुभाष सेतिया जी का जिन्होंने मेरे को देवधर्म का रास्ता बताया और देवधर्म के साथ जोड़ने की पूरी कोशिश की। मगर मुझे अभी उपकार इतने नज़र नहीं आते जितने आने चाहीए। मेरी मां को मैं अभी भी तंग करता हूँ। वादा करके सभा का सभा में नहीं जाता हूँ। और लोगों से भी जबान का पक्का नहीं हूँ। झूठ बहुत बोलता हूँ, ज्यादा बोलता हूँ और ऊंचा बोलता हूँ। देव आश्रम की सेवा नहीं करता हूँ।

मेरी बहिन जी, जो कि अजीब व्यवहार करती थी अब थोड़ा - थोड़ा देव धर्म की सभा से बदल रहा है। बहिन और मेरे में थोड़ा सा बदलाव आया है। सभा में आने से। मुझे अब मालूम पड़ा है कि मैं तो चारों जगतों से सेवा लेकर भी धन्यवाद कभी नहीं किया। कभी कबार कमियां नज़र आ जाती हैं मगर दूर अभी नहीं हो रही साधना में कभी बैठा नहीं हूँ, कभी किसी के लिए शुभ भावना नहीं निकलती, और हानि परिशोध भी नहीं करता हूँ। आपका धन्यवाद करता हूँ।

मेरी बहन को मैंने बहुत दुःखी किया है। मां को भी दुःखी दिया है। मेरी बहन को प्रेम कभी नहीं मिला।

बहन दुःखी बहुत है। चाहता हूँ कि आपकी संगत मिले और बहन को आपसे उच्च प्रेम मिले और जीवन में पहली बार वह किसी सत्संग में आ रही है। चाहता हूँ कि उसका दिल सभा, सेवा में लगे।

आपका बहुत - बहुत धन्यवाद मेरे उपकारी आपका बार - बार धन्यवाद

तुच्छ बालक

दिनांक : 23 - 02 - 2006

अनिल गर्ग पदमपुरः – मनुष्य की आंखें थी लेकिन वो रोशनी नहीं थी जो उपकारियों के उपकार दिखा सके, गुरु महाराज के कारण माँ - बाप के प्रति श्रद्धा, सम्मान के भाव पैदा हुए हैं। माता - पिता जो छोटे भाई के साथ रहते थे लेकिन छोटे भाई और उनकी पत्नी को जो व्यवहार मान सम्मान का करना चाहिये वो नही करते। माँ को जैसा वह खाना चाहती हैं, वैसा नहीं मिलता फिर वे शुगर की मरीज़ भी हैं।

गुरु महाराज की रोशनी शक्ति से मैं और मेरी पत्नी उनका किसी मात्र सम्मान करते हैं व उनकी इच्छा पूछते हैं। एक बार उनका किसी बात पर झगड़ा हो गया उसके बाद वो मेरे व मेरी पत्नी के कहने पर हमारे साथ खाना खाती हैं, व प्रसन्न रहती हैं ये सब गुरु महाराज की जीवन दायनी रोशनी से ही हुआ है। दिल चाहता है माँ - पिता जी का शारीरिक, मानसिक व आत्मिक हित कर सकूं।

मुझे मेरी मां मिल गई।

बहुत ही सन्मान के योग्य श्रीमान जी,

सत्य देव जी जय,

श्रीमान जी, मेरे परिवार में और मेरे हृदय में आपके लिए बहुत सम्मान है, मेरे लिए आप बहुत महान रूप रखते हो। मैंने आपकी सभाओं से बहुत लाभ प्राप्त किए हैं, उनका ब्यान करने की मेरी योग्यता नहीं, पर उसका असर सबके सामने है। मैं यह छुपा ही नहीं सकती कि इस घर को स्वर्ग का रूप देना, आपकी मेहरबानी है।

आप जो हृदयों को साफ करने का संघर्ष कर रहे हैं, उसकी मेहरबानी मैं आज आपको बता रही हूँ।

श्रीमान जी, कल्याण सत्संग हुआ, मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे मेरी मां मिल गई। मेरा दिल अन्दर से यह कर रहा था कि मैं ऊंचे ऊंचे पुकारूं कि मुझे मेरी मां मिल गई, मुझे मेरी मां मिल गई। मां के उपकार और उसका असली रूप आज नज़र आया है। मेरी देवी मां पता नहीं कितने दुःख उठाती रही, परन्तु हम पर दुःख का परछावां भी नहीं पड़ने दिया। सारा सारा दिन काम करती कि तुम अपनी पढ़ाई में ध्यान दो, सारी उमर काम ही करना है, मेरे सिर पर आराम करो और खुश रहो। शायद मां के लिए घर का काम ही उनका धर्म था। कभी हमने उन्हें किसी की बुराई करते नहीं सुना, किसी के साथ नाराज होते नहीं सुना, शायद उन्हें हमारी सेवा से छुट्टी ही नहीं मिलती थी। बहुत ही भोले स्वभाव की थी।

श्रीमान जी, यदि मैं कल्याण सत्संग पर न आती, दिल को हिलाने वाली सभाएं न सुनती शायद मैं मां को सदा के लिए खो बैठती।

आपसे अच्छे भाव लेकर मैं मां को मिलने चली गई, जब मैं गई तो मां को दर्द हो रहा था, फिर भी अपनी 4 महीने की पोती को गोद में उठाए बैठी थी। मां को मिलकर जब मैंने पूछा तो बताया कि मेरे बहुत दर्द हो रहा है। परिवार ने मुझे भरोसा दिलवाया के हम मुक्तसर अच्छे डाक्टर को दिखा कर आए हैं, दवाई से धीरे-धीरे आराम आएगा, आगे से बेहतर भी है, परन्तु इन्हें ज्यादा वहम है।

मैंने मां को पूछा कि हम आपको लेकर चलते हैं, शाम के 7 बजे थे, यदि आप कहें तो सुबह चलेंगे। हमारे आराम को ध्यान में रखते हुए उन्होंने कहा कि अब तो कुछ आराम है, सुबह ही चलेंगे।

अगले दिन डाक्टर के पास गए, तो उन्होंने बताया कि अपैंडैक्स फटने को हो गया था, पहले ही आप लेट हो, यदि थोड़ा और लेट हो जाते, तो मां को सदा के लिए गंवा बैठते। उन्होंने जल्दी ऑपरेशन करके मां को बचा लिया।

मेरे भाईयों ने आपका लाख लाख शुक्र किया कि जिनकी सभाएं सुनकर उनकी बहन उनके पास आई, हमने तो यही कहते रहना था कि मां वहम कर रही है, और मां ने घर पर ही मर जाना था। वह तुम्हारा धन्यवाद ही करते रहे। मां कह रही थी, मेरी बेटी ने मुझे बचा लिया, मैं उस गुरू महाराज का धन्यवाद करती नहीं थकती थी कि जिन्होंने मुझे मां की मदद के लिए भेजा।

श्रीमान जी मैं आपका कर्ज़ा सारी उमर न दे सकूंगी, जिनके संग्राम से मेरी मां बच गई।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी का मैं धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने इतनी तकलीफें उठाकर हमारे खाने का प्रबन्ध किया। सारे परिवार को भाग भाग कर सेवा करते देख सम्मान पैदा होता था।

भरपूर कौर (मोगा)

अपना नाशुकरापन नज़र आया।

मेरे बहुत ही सम्मान के योग्य सभापति जी,

मुझे इन सभाओं से बहुत लाभ हुआ है। सब सभाओं में ही मेरा ध्यान मेरे अपनी तरफ जाता रहा है। मैं वास्तव में अनुभव करता हूँ कि मेरे सारे दु:खों का कारण मैं आप हूँ।

पिछले लम्बे समय से मैं यही सोचता रहा कि मैं अच्छा हूं, मैं ठीक हूं और मैं सच्चा हूं। परन्तु यह सब भुलेखा था। इस सत्संग से पहले श्रीमान बलबहादुर सिंह जी सभाएं कराते रहे हैं। उस समय भी लाभ होता रहा है। मेरी तरफ से अपने बड़े भाई साहिब, और भाई साहिब भगत राम जी के सम्बन्ध में कुछ गलत फहमियों के कारण और कुछ मेरे स्वभाव की खराबी के कारण अनुचित बातें हो गई थी। बेशक अधिक झगड़ा नहीं हुआ, परन्तु मेरे नाशुकरेपन के कारण बात बिगड़ती गई। सभा में मैं महसूस कर रहा था, ध्यान अपनी नीचता की ओर जा रहा था, सारी घटना श्रीमान जी को बताई, उस समय भी मुझे बहुत दु:ख हो रहा था। फिर मैंने भाई साहिब आदि से क्षमा मांगी और भरे हृदय से पश्चाताप किया। उस समय मैं अपने आपको हल्का अनुभव कर रहा था। उन्होंने इस घटना को छोटी सी समझकर क्षमा कर दिया। धन्य हैं मेरे सतगुरू और धन्य हैं उनकी लासानी समाज!

एक और सभा में श्रीमान जी ने मुझे बड़े भाई साहिब के पैरों में सम्मान पूर्वक प्रणाम करने की प्रेरणा की तो मैं ने उनकी नेक सलाह पर अमल किया। अब मुझे इसमें कोई दिक्कत नहीं लगती, वह मेरे मां - बाप की तरह ही उपकारी हैं।

सभाओं में माता - पिता का उपकारी रूप बार - बार सामने आता रहा। मेरे माता पिता ने मुझे एक बार नहीं दो बार जन्म दिया है। जब मैं मुश्किल से दो साल का था, तो मैं बिमार पड़ गया, मेरे माता - पिता को जो खर्च, कष्ट संग्राम वा सन्ताप झेलना पड़ा, उसका कोई अनुमान नहीं हो सकता। बहुत गरीबी थी, परिवार बड़ा था, खर्च आमदन से कहीं अधिक था, ऐसी हालत में मेरा ईलाज करवाया। मैं ऐसे माता - पिता का एक जन्म में तो क्या, कई जन्मों में कर्ज़ा नहीं उतार सकता। गुरु महाराज की कृपा से, उनकी संगत में बैठकर यह सब कुछ साफ दिखाई देने लगा कि मेरे मां - बाप जो मेरे लिए हैं और कोई नहीं हो सकता। मैं जो कुछ भी हूँ अपने माता - पिता की मेहरबानियों से ही हूँ।

गुरु महाराज की अद्वितीय रोशनी में यह भी नज़र आया है कि मेरे खराब स्वभाव के कारण कई बार घर में वाद विवाद होता है, यह मुझे पहले नज़र नहीं आया। परिवार में मेरी पुत्रवधुएं मेरी बेटियों जैसी हैं। मेरी बहुत ईज्ज़त करती हैं, सेवा करती हैं, उनके साथ भी ऊंचा नीचा बोल जाता हूँ। प्रण करता हूँ कि आगे से फिर ऐसा मौका नहीं आने दूंगा। मेरी धर्म पत्नी जो कई बातों में मुझसे अच्छी हैं, उनका भी यथेष्ट आदर कर सकूं और जरूरत पड़ने पर सेवा कर सकूं। पहले जो खराब वा अपशब्द

बोले हैं, उनके लिए पहले भी क्षमा मांगी है, अब फिर मांगता हूँ।

मेरे सारे परिवार पर बहुत सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी का पिछले लम्बे समय से हितकारी, रक्षाकारी हाथ है। इनकी बड़ी कृपा है कि हमें अपना जानकर हमारा बहुत ख्याल रखते हैं। इनकी मेहरबानियां बार-बार याद आती हैं।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी अपनी सभाओं के द्वारा वा सामाजिक जीवन में मेरी सहायता करते हैं, उनका भी उपकार अनुभव करता हूँ। यह सब मेरे गुरु की मुझ पर आपार कृपा है। उनकी संगत वा निराली रोशनी में ही यह सब कुछ नज़र आता है। मैं दिल से चाहता हूँ कि मेरा ऐसे गुरु के साथ नाता जुड़ा रह सके। मुझे इस संगत में वा गुरु चरणों में बैठने का अधिकार मिलता रह सके। मैं गुरु के लिए सदा वफादार रहकर पीली पगड़ी के साथ इस जहान से जाऊं। यही मेरी कामना है। धन्यवाद।

तेज राम (कल्याण)

बंसीलाल चल बसे

श्री बंसीलाल जी हरियाणा के निर्माता वा लौह पुरूष 78 वर्ष की आयु में दिल्ली हस्पताल में मंगलवार की रात को दम तोड़ गए। वह अपने इरादे और असूलों के पक्के और कठिन फैसले लेने वाले विशेष इन्सान थे। वह चार बार हरियाणा के मुख्य मन्त्री बने और भारत के रक्षामन्त्री भी रहे। वह दोस्तों के खास दोस्त और शत्रु के कड़े शत्रु थे। हरियाणा के निर्माण में उनका योगदान सदा अमर रहेगा। पिछले वर्ष उनके सुपुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह जी की दुर्घटना में मृत्यु ही उनकी दमा-ग्रस्त कमज़ोर सेहत के लिए जानलेवा सिद्ध हुई। हरियाणा का प्रत्येक वर्ग और कांग्रेस जगत उनके निधन पर विशेष रूप से शोक मना रहा है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts